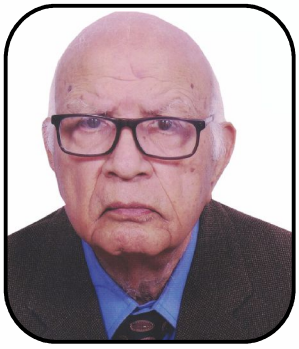

DR. SURINDER KUMAR VASAL

Dr. Surinder Kumar Vasal is an accomplished Maize Breeder, Geneticist and Millennium World Food Prize Laureate.

2. Born on 12th April, 1938 and grew up in Amritsar, Dr. Vasal completed his university education and academic degrees from various institutes in India including Ph.D from Indian Agricultural Research Institute, New Delhi. His professional career started in Himachal Agriculture Department where he served as Assistant Botanist Maize cum Assistant Professor. In 1967, he took up his first foreign assignment with Rockefeller Foundation Agricultural Program in Thailand as Research Associate and conducted research on maize. He was one of the key players to develop Suwan-1, a most popular variety even today in the world and identified resistance to Curvularia lunata and its inheritance.

3. Dr. Vasal moved to Mexico in 1970 as a post-doctoral fellow at the International Center for Maize and Wheat Improvement (CIMMYT) and later he was promoted as Senior Maize Scientist. He made significant contributions to the development of agronomically acceptable Quality Protein Maize (QPM) cultivars for varied maize production environments. In 1984, he was assigned a hybrid maize development program at CIMMYT and also served as maize program germplasm coordinator. In 1991, as coordinator of lowland tropical maize program of CIMMYT, his team released the first set of 58 tropical and 42 subtropical lines as CMLs. In 1994, an additional 62 tropical white and yellow lines and 55 QPM lines were announced as CMLs. In 1997, he was the first scientist to be promoted to the rank of Distinguished Scientist and was given a new role as Team Leader of the Asian Regional Maize Program of CIMMYT in Thailand. He developed sources of resistance to downy mildew, strengthened hybrid research activities and coordinated the Tropical Asian Maize Network (TAMNET). He has registered 12 hybrid oriented source populations, 24 white lines and 21 yellow lines in Crop Science journal and published 14 book chapters and 150 research papers. He has trained many post-doctoral fellows, visiting scientists and conducted in-country training courses on hybrid. He is a fellow of many scientific societies in India and abroad.

4. Dr. Vasal has received many awards such as recipient of International Service in Crop Science Award, International Service in Agronomy Award, Crop Science Society Presidential Award, Chinese Friendship Award and Dr. M.S. Swaminathan Award for Leadership in Agriculture from TAAS. He in conjunction with Dr. Evangelina Villegas were Awarded 2000 World Food Prize by the World Food Prize Foundation. He has received honorary doctor of science degrees from IARI, PAU and JNKVV.

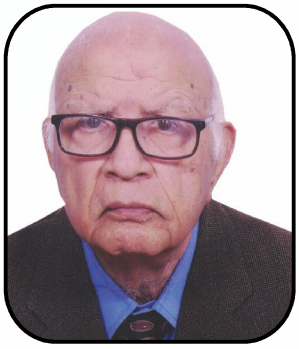

डॉ. सुरिन्द्र कुमार वासल

डॉ. सुरिन्द्र कुमार वासल सिद्धहस्त मक्का प्रजनक, आनुवांशिकीविद् और मिलेनियम विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता हैं।

2. 12 अप्रैल, 1938 को जन्मे, और अमृतसर में पले–बढ़े डॉ. वासल ने अपनी उच्च शिक्षा और शैक्षिक डिग्रियां भारत के विभिन्न संस्थानों से हासिल की, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से पीएचडी भी शामिल है। उनका प्रोफेशनल करियर हिमाचल कृषि विभाग से शुरू हुआ, जहां उन्होंने सहायक मक्का वनस्पतिशास्त्री सह सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। वर्ष 1967 में, उन्होंने थाईलैंड में रॉकफेलर फाउंडेशन एग्रीकल्चर प्रोग्राम के साथ रिसर्च एसोसिएट के रूप में विदेश में अपना पहला असाइनमेंट शुरू किया और मक्के पर अनुसंधान किया। सुवान–1, जो आज भी दुनिया में सबसे लोकप्रिय किस्म है, को विकसित करने में उनकी अग्रणी भूमिका रही और कर्वुलरिया लुनाटा के प्रति प्रतिरोधकता की पहचान की।

3. वर्ष 1970 में, डॉ. वासल इंटरनेशनल सेंटर फॉर मेज़ एंड व्हीट इंप्रूवमेंट (सीआईएमएमवाईटी) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में मैक्सिको चले गए, जहां बाद में उन्हें वरिष्ठ मक्का वैज्ञानिक के पद पर पदोन्नत किया गया। उन्होंने विभिन्न मक्का उत्पादन वातावरणों के लिए कृषि में स्वीकार्य गुणवत्ता वाले प्रोटीन मेज़ (क्यूपीएम) किस्मों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 1984 में, उन्हें सीआईएमएमवाईटी में एक हाइब्रिड मक्का विकास कार्यक्रम शुरू करने की जिम्मेदारी सौंपी गई और उन्होंने मक्का कार्यक्रम जर्मप्लाज़्म समन्वयक के रूप में भी कार्य किया। वर्ष 1991 में, सीआईएमएमवाईटी के मैदानी उष्ण कटिबंधीय मक्का कार्यक्रम के समन्वयक के रूप में, उनकी टीम ने सीएमएल के रूप में 58 ट्रॉपिकल और 42 सबट्रॉपिकल लाइनों का पहला सेट जारी किया। वर्ष 1994 में अतिरिक्त 62 ट्रॉपिकल श्वेत और पीली लाइनों और 55 क्यूपीएम लाइनों को सीएमएल घोषित किया गया। वर्ष 1997 में, विशिष्ट वैज्ञानिक के पद पर पदोन्नत होने वाले वह पहले वैज्ञानिक थे और उन्हें थाइलैंड में सीआईएमएमवाईटी के एशियन रीजनल मेज़ प्रोग्राम के टीम लीडर के रूप में नई भूमिका दी गई। उन्होंने डाउनी फफूंद के प्रतिरोध के स्रोत विकसित किए, हाइब्रिड अनुसंधान गतिविधियों को मजबूत किया और ट्रॉपिकल एशियन मेज़ नेटवर्क (टैमनेट) का समन्वय किया। उन्होंने ने क्रॉप साइंस जर्नल में 12 हाइब्रिड ओरिएंटेड सोर्स पॉपुलेशन, 24 व्हाइट लाइन और 21 येलो लाइन रजिस्टर किए हैं और 14 पुस्तक अध्याय और 150 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्होंने कई पोस्ट–डॉक्टरल फेलो, विजिटिंग वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित किया है और हाइब्रिड पर देश में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किए हैं। भारत और विदेशों में कई वैज्ञानिक समितियों के फेलो हैं।

4. डॉ. वासल, को इंटरनेशनल सर्विस इन क्रॉप साइंस पुरस्कार, इंटरनेशनल सर्विस इन एग्रोनॉमी पुरस्कार, क्रॉप साइंस सोसायटी प्रेसीडेंशियल पुरस्कार, चाइनीज फ्रेंडशिप अवार्ड और टीएएएस से कृषि में नेतृत्व के लिए डॉ. एम एस स्वामीनाथन पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ल्ड फूड प्राइज़ फ़ाउंडेशन द्वारा उन्हें डॉ. इवांजेलिना विलेगास के साथ 2000 का विश्व खाद्य पुरस्कार दिया गया। उन्हें आईएआरआई, पीएयू और जेएनकेवीवी से मानद डॉक्टर ऑफ़ साइंस की डिग्री मिली है।